ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 241-243**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

रामलीला रामायण का मानव समाज पर प्रभाव

श्रीमती सीमा मिश्रा

सहायक प्राध्यापक–समाजशास्त्र विभाग, सांदीपनि कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन (म0प्र0) भारत

Received-06.08.2022, Revised-10.08.2022, Accepted-15.08.2022 E-mail: mishraseema14@gmail.com

सारांश:– *भारत कई त्यौहारों का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ पर हर वर्ष मौसम के साथ–साथ कार्यक्रमों का आयोजन होता है। भारत के विभिन्न पौराणिक व्याख्याओं के साथ मेला नाटक, नोटंकी आदि भारतीय संस्कृति और विरासत के लिए अभिनय है।*

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक प्रसिद्ध रामलीला का मंचन सम्पूर्ण भारत में अपनी–अपनी भाषाओं एवं लोक संस्कृति के आधार पर किया जाता है। परन्तु रामलीला का प्रवर्तक कौन है? यह विवादास्पद प्रश्न है कई भक्तों की दृष्टि में यह अनादि है। एक संकेत के माध्यम से त्रेता युग में श्री रामचन्द्र वनगमन उपरान्त अयोध्या वासियों ने चौदह वर्ष की वियोग अवधि राम की बाल लीलाओं का अभिनय कर बिताई थी। तभी से इसकी परम्परा का मंचन हुआ।

कुंजीभूत शब्द– त्यौहारों का क्षेत्र, प्रवर्तक, मनोरंजनकारी, धनोपार्जन, पौराणिक, मेला नाटक, नोटंकी, भारतीय संस्कृति।

एक अन्य प्रमाण के द्वारा यह प्रमाणित होता है कि उसके आदि प्रवर्तक मेगा भगत जो काशी में काशी के निवासी माने जाते हैं। जिन्हें स्वप्न में आकर राम चन्द्रजी ने लीला करने का आदेश दिया जिससे लोगों को भगवान के दर्शन हो सके। कुछ लोगों के मतानुसार रामलीला का अभिनय परम्परा के प्रतिष्ठापक गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। उन्होंने हिन्दी में लोक मनोरंजनकारी अभाव पाकर उसका श्री गणेश किया इनकी प्रेरणा से अयोध्या और काशी के तुलसी घाट पर प्रथम बार रामलीला हुई।

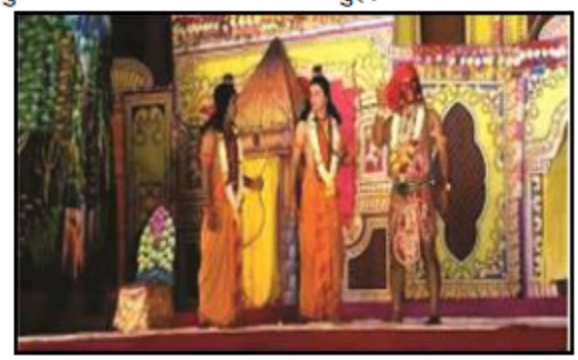

प्राचीन काल में रामलीला में नृत्य संगीत की प्रधानता नहीं होती थी क्योंकि चरित्रनायक गंभीर, वीर, धैर्य, शालीन एवं मर्यादा प्रिय पुरुषोत्तम होते थे। परिणामस्वरूप वातावतरण में विशेष प्रकार की गंभीरता विराजती थी। इस लीला की पहली मण्डली नहीं होती थी अब कुछ पेशेवर लोग मण्डलियां बनाकर लीला अभिनय से धनोपार्जन करते हैं। भारत के ग्वालियर, जयपुर, इलाहबाद आदि नगरों में मुक्त अभिनय होता है। दर्शकों को अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, चारों फलों की प्राप्ति होती है। रामलीला देखने से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के ह्रदय में रामलीला गान की इच्छा जागी परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य को रामलीला नामक चम्पू की रचना मिली।

प्रसिद्ध रामलीला स्थल– रामलीला का मूल आधार गोस्वामी तुलसीदास .त रामचरितमानस है लेकिन एकमात्र नौटकीं नहीं श्रीराम कथा वाचक द्वारा चरित रामायण को भी कहीं–कहीं यह गौरव प्राप्त है।

वैसे तो काशी की सभी रामलीलाओं में गोस्वामी द्वारा रचित रामचरितमानस ही उत्तम है। इस आयोजन के लिए वर्ष भर में केवल दो माह ही अधिक उपयुक्त माने गये हैं। अश्विन और कार्तिक। वैसे तो इसका प्रदर्शन कभी भी और कहीं भी किया जा सकता है। रामनगर की लीला भदपद शुक्ल चौदह को प्रारम्भ होकर शरद पूर्णिमा को पूरी तरह समाप्त होती है और नक्खी घाट की शिवरात्री से प्रारम्भ होकर चैत्र अमावस्या अर्थात 33 दिनों तक चलती है।

गोस्वामी तुलसीदास अयोध्या में प्रतिवर्ष रामनवमी के उपलक्ष्य में इसका आयोजन कराते थे। कहीं दिन के अपराह्न काल में और कहीं रात्रि के पूर्वार्द्ध में उसका प्रदर्शन होता था। जननायक राम की लीला भारत के अनेक क्षेत्र में होती है। जिस तरह श्री .ष्ण की रासलीला का प्रधान केन्द्र उनकी लीला भूमि वृन्दावन है। उसी तरह रामलीला का स्थल अयोध्या और काशी तथा मिथीला, मथुरा, आगरा, अलीगढ़, ऐटा, इटावा, कानपुर आदि नगरों में अश्विन माह में अवश्य ही आयोजित होती है। परन्तु जितनी लीलाओं की लीला भूमि वाराणसी में है उतनी और कहीं नहीं।

राजस्थान और मालवा आदि भाग में यह चैत मास में आयोजित होती है। वीर, करुण, अद्भुत, श्रृंगार आदि रसों से भरपूर

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

रामलीला अपना रंगमंच संकीर्ण नहीं वरन् विराट रूप में होती है। दिल्ली में रामलीलाओं का इतिहास बहुत प्राचीन है। सबसे पहली रामलीला बहादुरशाह जफर के समय पुरानी दिल्ली के रामलीला मैदान में हुई थी।

रामलीलाओं में छम्मीलाल ठोडियाल द्वारा लिखित रामलीला पुस्तक बहुत प्रचलित पुस्तक है। अधिकतर रामलीलाएं इसी पुस्तक पर आधारित हैं। रामायण हिन्दू रघुवंश के राजा राम की गाथा है, यह आदि कवि वाल्मिकी द्वारा संस्त में रचित अनुपम महाकाव्य है। जो स्मृति का वह भाग है जिसे आदि काव्य तथा इसके रचियता महर्षि वाल्मिकि को आदि कवि भी कहा जाता है।

रामलीला का मानव समाज पर प्रभाव– रामलीला रामायण, रामायण का ही नाट्य ग्रंथ है जिनमें प्रभु राम जी का सम्पूर्ण चरित्र वर्णन व्यवस्थित है। रामायण एक नाटकीय रूप में कलात्मक एंव सुव्यवस्थित ग्रंथ है। रामायण एक महाकाव्य है, जिसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की है। जब तक इस महाकाव्य का जब तक हिंदी अनुवाद नहीं हुआ तब तक केवल विद्यवान आचार्यगण आदि इसके महत्व के बारे में जानते थे। इन्ही के द्वारा इसे जनमानस तक पहुंचाया जाता था।

विचारों के आदान–प्रदान में श्रृव्य एवं .श्य काव्य अति महत्वपूर्ण साधन रहे। अतः जब इसका हिंदी अनुवाद गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा किया गया तब देश के अधिक से अधिक लोगों ने इसका अनुसरण किया। हालांकि आज भी पूर्ण रूप से भारत में हिंदी नहीं बोली जाती फिर भी अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी का अधिक महत्व रहा। इस आधार पर तुलसीदास जी की रामचरित मानस विश्व प्रसिद्ध हुई तथा इस ग्रंथ को अपनी–अपनी भाषाओं में अनुवाद करके अपने जीवन को आध्यात्मिकता से जोड़कर सरल व सुंदर एवं जीवन को सरल बनाया जा रहा है। इसी के आधार पर रामचरितमानस का हिन्दी टेलीविजन पर जनमानस के लिए रामायण पर आधारित विभिन्न धारावाहिक प्रसारित हुए। जैसे कि रामानंद सागर की संपूर्ण रामायण।

रामलीला के इस मंचन में बड़े पैमाने पर लोग शामिल हो रहे हैं। ऐसे मोके पर विषय वेहद अहम है कि वतर्मान समाज के आधुनिक दौर में कितनी प्रासंगिक है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की जन्म स्थली है भगवान श्री राम के जीवन से ही आज पृथ्वी पर मानव जीवन चरित्र गुण वा आदर्श का भाव प्राप्त होता है। शास्त्रों के अनुसार भगवान का पृथ्वी पर अवतार बुराइयों, अत्याचारों को समाप्त करने के लिए हुआ था। इसलिए भगवान की आदर्श लीला को रामायण में लिखा था।

रामायण के आधार पर आज भारत के साथ–साथ विदेशों में भी राम की व्याख्यान रामलीला के माध्यम से किया जाता है। लीला देखने से मानव के जीवन पर बहुत ही बड़ा प्रभाव पड़ता है इसलिए आज भी कहीं पर कोई भी धार्मिक पर्व व कार्यक्रम पड़ता है तो उसमें रामलीला दिखाई जाती है।

आचार्य सत्येंद्र ने बताया कि अयोध्या में रामलीला अनादि काल चल रही है और रामलीला देखने से बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। रामलीला देखने से नास्तिक आदमी भी आस्तिक हो जाता है। वस्तुतः व्यक्ति को रामलीला से यह आभास होता है। कि भगवान अभी भी है, भगवान राम ने जो लीलाएं की धर्म की रक्षा और धर्म की स्थापना के लिए की वह सत्य है। इसलिए भगवान की उपासना करना बहुत ही लाभदायक है। भगवान राम की लीला को देखकर व्यक्ति का मन बहुत ही प्रसन्न हो जाता है।

भगवान राम और उनके भाई भरत के बीच का प्रेम देख एक आदर्श व्यक्तित्व के प्रतिरूप में मनुष्य अपने जीवन में धारण करता है, रामलीला को देखने वाले उनके आदर्श पर चलने का प्रयास करते हैं। जिस प्रकार भगवान राम अपनी मर्यादा पुरुषोत्तम रूप में आए और अपने भाइयों, माता–पिता व प्रजा के प्रति प्रेम आदर्श रहे उसी प्रकार हमें भी उनके आदर्शों को अपने में समाहित करना एवं ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। उनके कार्यों से ही इन्हें भगवान मानते हैं। इसी प्रकार से हमें भी सदाचार का आचरण करने की सीख देती है, रामलीला...।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

रामकथा जनमानस को सदैव प्रभावित करने वाली एक पावन धारा है। भारतीय समाज में इसका विशिष्ट स्थान है। यह ज्ञान का अक्षय भंडार है। यह सत्य है पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों ने लीला के रूप में रामायण (रामकथा) को बार–बार किया है और उससे मिलने वाले मूल्यों और संस्कारों को नवीन.त करते हुए अपनाया भी है। राम के महान चरित्र का अनुसरण करते हुए मानव समाज, मानव सेवा का मार्ग अपना सकता है। देश तथा विश्वभर में समन्वय की भावना स्थापित कर सकता है। रामकथा के कारण ही हमारे रोम–रोम में राम बसते हैं। आज समाज में मानवीय मूल्यों मर्यादाओं तथा आदर्शों को जीवित रखना है, तो राम कथा से बढ़कर कोई सुरक्षा कवच नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https%//hi-m-wikipedia-ang, रामलीला – विकिपीडिया।
2. www- pragyala.com, मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
3. https%//www-jagran-com, मंचन में सामाजिक जागरूकता का प्रभाव।
4. www-patrika-com, श्री बिहारी रामलीला।
5. www-dainik bhaskar, तुलसी का रामराज्य और वर्तमान प्रासंगिकता।
6. रामलीला–प्रेमचंद, अनुराग ट्रस्ट।

*****